

HARIV. 14414. सुकलो दातृभोक्तरि Spender und Geniesser AK. 3,1,8. भोक्ता राज्यस्य HARIV. 15038. कल्याणपरंपराणाम् RAGH. 2,50. विद्याधरस्य KATHAS. 26,224. आत्मा ह्येकः सुखदुःखस्य भोक्ता empfandt Freuden und Leiden MBH. 12,5163. यदि कर्तारं भोक्तारं पुरुषं स्तोषि PRAB. 108,9. अहं कर्ता अहं भोक्ता VEDĀNTAS. (Allah.) No. 86. Schol. zu Kap. 1,17. धीरनादितो ऽस्याश्च सिद्धा भोक्तरनादिता der sich des Intellects bedient (die Seele) NILAK. 33. 36. 137. Kap. 1,143. SĀMĀKHAJAK. 17. TATTVAS. 17. ASHṬĀV. 1,6. 13,4. ÇVETĀÇV. Up. 1,8.9. (ब्रह्म) निर्गुणं गुणभोक्तृ च BHAG. 13,14. अग्रियस्य तु पथ्यस्य वक्ता भोक्ता (v. l. für श्रोता) च दुर्लभः so v. a. Beherziger Spr. 3283. Geniesser so v. a. Benutzer des Landes, Fürst Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,28,7. so v. a. Geniesser eines Weibes, Gatte H. 517. HALĀ. 2,342. — Vgl. प्रातर्भोक्तर.

भोक्तव्य (wie oben) adj. 1) zu genießen, zu essen: एषामन्नं न भोक्तव्यम् JĀGĀ. 1,165. तदन्नमपि भोक्तव्यं त्रिर्यते यदनामयम् Spr. 5168. Hir. 112,4. येषामस्ति च भोक्तव्यं ग्रहणीदोषपीडिताः । न शक्नुवन्ति ते भोक्तुम् die zu essen haben Spr. 4898. स्वादु भोक्तव्यमप्राप्य किमीदृङ्गाय भुज्यते RĀGĀ-TAR. 1,217. भोक्तव्यमयं युष्माभिः सर्वैरेव गृहे मम ihr müsst speisen KATHAS. 30,143. 145. MĀRK. P. 29,37. शनैः शनैश्च भोक्तव्यं स्वीयं विनमुपार्जितम् । रसायनमिव प्राज्ञैः Spr. 2930. आधिः zu gebrauchen, zu benutzen M. 8,144. पुत्रेण च — भोक्तव्या — चिरं सप्तद्वीपवती मही zu genießen so v. a. zu beherrschen MĀRK. P. 123,35. ययामुष्यान्साहचर्यत्वा भोक्तव्य इतो जनः zu benutzen, auszubeuten MBH. 12,3311. तस्माद्भोजयितव्यश्च भोक्तव्यश्च परो जनः 3946. — 2) = भोजनीय, भोजयितव्य zu speisen: आह्निकाले तु यत्नेन भोक्तव्याः (ब्राह्मणाः) MBH. 3,13365. HARIV. 13629.

भोक्तृ n. nom. abstr. von भोक्तर MĀTRJUP. 6,10. सुखदुःखानाम् BHAG. 13,20. BHĪG. P. 3,26,8. Schol. zu Kap. 1,143.

1. भोगं (von 1. भुञ्ज्) m. gaṇa उक्तादि zu P. 6,1,160 (?). 1) Windung, Ring (einer Schlange); = अहः कायः (शरीरम्) AK. 3,4,3,24. TRIK. 3,3,63. H. 1313. an. 2,41. MED. g. 14. HALĀ. 3,20. RV. 5,29,6. (हस्तघ्नः) अहिरिच भोगैः पर्यति ब्राह्मन् 6,73,14. AV. 14,9,5. तं वृत्रो पौडशि-भिर्भिर्गैरिनिनात् TS. 2,1,1,5. 6. 5,4,5,4. KĀTH. 13,4. 21,8. भुजगेन्द्रभोगप्रलम्बव्राह्मन् MBH. 1,7212. नागभोगनिकाशश्च ब्राह्मिः 4,1049. 7,6100. सर्वभोगेन वेष्टितम् 3,12430. RAGH. 11,59. नागभोगेन महता परिभ्य महीमिमाम् MBH. 3,13358. 4,191. प्रवेशितश्च तैः सर्वैः स कृत्वा भोगवन्धनम् HARIV. 3664. 10200. VARĀH. BRH. S. 11,62. PRAB. 1,7. सुषाय भगवान्विष्णुं योगत एव सः । नागस्य भोगे महति शेषस्य MBH. 3,13557. Verz. d. Oxf. H. 234,b,7. RAGH. 10,7. KĀVĀD. 2,346. भोगीशभोगशयन LA. (II) 91,20. महां adj. MBH. 1,1203. दीप्त adj. R. 6,86,32. Insbes. die sogenannte Hantle einer Schlange AK. TRIK. H. H. an. MED. गतभी-र्भीतिजननं भोगं भोगीच दर्शयेत् KĀM. NĪTIS. 13,17. कृत्स्नसर्पः प्रसारितभोगस्तिष्ठति PAŚKĀT. 33,6. ed. orn. 43,20. भोगिभोगावसक्तेन मणिरत्नेन भोग = शरीर Schol.) HARIV. 2496. नागा भोगोक्तं धरः BHĪG. P. 3,20,48. Nach ÇABDAR. im ÇKDR. auch Schlange und Körper; vgl. 1. भोगवन्त्. — 2) eine best. Aufstellung der Truppen KĀM. NĪTIS. 19,41. 48. 54.

2. भोग (von 3. भुञ्ज्) m. 1) Genuss, Nutzung, Besitz; Gebrauch, Verbrauch, Verwendung; Nutzen, Vortheil: क्षिप्राययमुत् भोगं समानं RV. 3,34,9. यदा ते मर्तोः अनु भोगमानन्द 1,163,7. AV. 12,1,60. कस्मै चिद्भोगाय

zu irgend einem Zweck 4,7. 19,44,10. नाहं विन्दामि कितवस्य भोगम् ich weiss nicht, wozu ein Spieler nütze ist, RV. 10,34,3. पुनः प्राणमिह नौ धेहि भोगम् so v. a. प्राणस्य भोगम् 39,6. यावत्तः पृथिव्यां भोगाः wie vielfachen Nutzen die Erde gewährt Ait. Br. 7,13. तस्मादु ह स्त्रियो भोगमैव कारयन्ते deshalb wendet man den Frauen Vortheile (Gaben u. s. w.) zu TBR. 2,3,10,3. TS. 2,1,1,2. 4,12,6. 6,5,6,2. आप एतावति भोगे भुज्यमाने न क्षीयन्ते obwohl sie so vielfache Verwendung finden ÇAT. Br. 3,9,3,27. 5,1,3,28. 11,3,3,6. यो वाचि भोगः 14,4,1,3. अल्पी-यो भोगात् weniger als er braucht LĀTJ. 2,8,25. भोगं चर्मणा कुर्वति er verwende das Fell ĀÇV. GṚHJ. 4,8,26. Nir. 8,5. — न शय्यासनभोगेषु रतिं विन्दति beim Liegen, Sitzen und Essen N. 2,4. WILSON, Sel. Works 1,127. राज्ञो Königsmahl ebend. न मूलफलभोगेषु स्पृहामप्यकरोत्तदा Genuss von Wurzeln und Früchten MBH. 12,4277. H. 72. मय्यो MĀRK. P. 19,4. दानं भोगो नाशस्तिन्नो गतयो भवन्ति वित्तस्य Spr. 1134. 1139, v. l. PAŚKĀT. 133,11. 14. कामो Liebesgenuss KATHAS. 29,53. BRAHMA-P. in LA. 38,18. भवो Spr. 937. आधिः Benutzung eines verpfändeten Gegenstandes M. 8,149. 150. JĀGĀ. 2,59. 157. भोगस्त्रैर्वारुपः eine durch drei Generationen fortlaufende Benutzung VJĀS in VJAYABHĀRAT. ÇKDR. RA. 37 MBH. 1,2248. RAGH. 8,2. चक्रे प्ररुमठं धीमान्स भोगाय तपस्विनाम् zur Benutzung für RĀGĀ-TAR. 3,38. स्त्रीणां भोगे च मैथुने der fleischliche Genuss von Weibern M. 8,100. स्त्री MĀRK. P. 19,4. Spr. 3401. KATHAS. 21,26. वयभोगा भवन्तु ताः MBH. 1,4203. भुज्जो der fleischliche Genuss eines Buhlen KĀVĀD. 2,346. Ind. St. 8,370,8. भोग so v. a. राज्यभोग Regierungः तावत्सुखं भूयतिर्भोगं प्राप्यते नृप । अभियेकजलं यावत्त मूर्ध्नि विनिपात्यते ॥ MĀRK. P. 130,27. Empfindung (von Freude oder Leid) NILAK. 39.39.62. Kap. 1,17. 103. JOGAS. 2,13. 18. यदच्छयागता भोगो न दुःखाय न तुष्टये ASHṬĀV. 3,14. 16,2. 17,4. कर्मभोगात्प्रमुच्यते die Activität und die daraus hervorgehende Empfindung von Freude oder Schmerz PAŚKĀT. 1,9,23. कर्मभोगतये सति 4,24. पूर्वदुष्कृतो der schmerzvolle Empfindung nach —, die Strafe für KATHAS. 30,93. Genuss so v. a. Freude, Lust: तस्य (दण्डस्य) सर्वाणि भूतानि स्वावराणि चराणि च । भयाद्भोगाय कल्पन्ते werden des Genusses theilhaftig M. 7,15. 22. 23. तेषाम् — कर्मभोगाय न कल्पन्ते verschafft ihnen keinen Genuss PAŚKĀT. 1,13,23. भोगस्य भाजनं राजा Spr. 2069. भोगः परोपतायेन पुनो दुःखाय न स्थिरः der Genuss auf Kosten Anderer 2068. दिव्यं भोगमवाप्य Vid. 133. 161. 308. Spr. 1092. किं भोगैर्विवितेन वा BHAG. 1,32. MBH. 8,4915. 13,307. सर्वभोगैः परित्यक्तं रामम् R. 2,104,10. भुज्जीय भोगावुधिरप्रदिग्धान् BHAG. 2,3. ये हि संस्पृशन्ता भोगा दुःखेनय एव ते 3,22. भुज्जु भोगान् KATHAS. 4,132. MĀRK. P. 61,64. ÇUK. in LA. (II) 36,1. विपुला भोगाः Spr. 4704. अनुत्तमाः प्रुभाः MBH. 4,404. इष्टाः BHAG. 3,12. ad MEGH. 113. पुष्कलाः ASHṬĀV. 18,2. विविधाः PAŚKĀT. 130,21. असारविरसाः KATHAS. 36,105. 44,96. भोगेष्वनुत्सेकिनी (v. l. für भाग्येषु) ÇUK. 93. BHĪG. P. 7,13,17. भोगा न भुक्ता वयं भुक्ताः Spr. 2070. भुज्जुवृत्तयः 2071. मेघवितानमध्यविलसत्सौदामिनीचक्षलाः 2072. तुङ्गतरंगभङ्गचपलाः 2073. अश्वच्छायासदृशाः PAŚKĀT. 33,13. भुज्जु MĀRK. P. 23,115. भोगेच्छा नोपभोगेन भोगिनो ज्ञानु शायति Spr. 4678. न वृध्यते धनभोगात्त सौख्यम् 2643. पर्याप्त adj. M. 3,40. विविधाकारपानभोगादिभोगभुज्जु KATHAS. 44,81. मय्यपानं तत्रा कार्यं सत्ये भोगमोक्षदम् Verz. d. Oxf. H. 91,b,20. भोगमोक्षप्रदा भैरवी 93,b,16. ASHṬĀV.